IJRAR.ORG E-ISSN: 2348-1269, P-ISSN: 2349-5138
INTERNATIONAL JOURNAL OF RESEARCH AND ANALYTICAL REVIEWS (IJRAR) | IJRAR.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मातृभाषाः नई शिक्षा नीति 2020 का विशेष संदर्भित अध्ययन

अरविन्द कुमार राजपूत
असिस्टेंट प्रोफेसर
नॉर्थ इंडिया कॉलेज ऑफ हायर एजुकेशन,नजीबाबाद

शोधसारः प्रस्तुत शोधपत्र में, शोधकर्ता ने नई शिक्षा नीति में भाषा के महत्व को दर्शाने का प्रयास किया है। शोधकर्ता के अनुसार, प्रत्येक मनुष्य के लिए उनकी भाषा बहुत स्पष्ट और सरल ह। वह अपनी भाषा में कोई भी कार्य बड़ी सफलता के साथ कर सकता है। इसी विचार को ध्यान में रखते हुए, नई शिक्षा नीति ने छात्रों को उनकी इच्छानुसार, उनकी अपनी भाषा में अध्ययन करने की स्वतंत्रता दी है। इस पत्र में, नई शिक्षा नीति के छात्रों और शिक्षकों पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन किया गया है। शोधार्थी ने इस पत्र के अध्ययन को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के प्रदत्तों का अध्यन किया, जिसमें से उन्होंने गुणात्मक स्तर पर प्राथमिक और माध्यमिक डेटा का उपयोग किया है और इस निष्कर्ष पर पहुंचता है कि नइ शिक्षा नीति छात्रों के समग्र विकास में एक बहुत ही महत्वपूर्ण कारक है। यह एक महत्वपूर्ण कदम है, जिससे आने वाले समय में छात्रों को लाभ होगा।

मूलशब्दः राष्ट्रीय शिक्षा नीति, विकास, मातृभाषा, शिक्षक प्रशिक्षण, कौशल।

प्रस्तावना

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता की प्राप्ति, एक समान और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मौलिक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक पहुंच प्रदान करना सार्वभौमिक है, आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के मामले में वैश्विक स्तर पर भारत की निरंतर चढ़ाई और नेतृत्व की कुंजी शिक्षा है। सार्वभौमिक उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा व्यक्ति, समाज, देश और देश की बेहतरी के लिए हमारे देश की समृद्ध प्रतिभाओं और संसाधनों को विकसित करने और अधिकतम करने का सबसे अच्छा तरीका है। अगले दशक में, भारत में युवाओं की सबसे बड़ी आबादी होगी, और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसर प्रदान करन की हमारी क्षमता, हमारे भविष्य का निर्धारण करेगी।

प्राचीन और शाश्वत भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत इस नीति में हमारा मार्गदर्शन करती रही है। ज्ञान (ज्ञान), ज्ञान (प्रज्ञा), और सत्य (सत्य) की खोज को हमेशा भारतीय विचार और दर्शन में सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल इस दुनिया में जीवन या स्कूली शिक्षा से परे जीवन की तैयारी के रूप में ज्ञान की प्राप्ति नहीं था, बल्कि स्वयं की पूर्ण प्राप्ति और मुक्ति के लिए था। तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभी जैसे विश्व स्तरीय संस्थानों ने प्राचीन भारत के बहु–विषयक शिक्षण और अनुसंधान के उच्चतम मानकों को स्थापित किया और पृष्ठभूमि और देश के विद्वानों और छात्रों की मेजबानी की। भारतीय शिक्षा प्रणाली ने चरक, सुश्रुत जसे महान विद्वानों को जन्म दिया। आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्त, माधव, पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और तिरुवल्लुवर, कई अन्य लोगों के बीच, जिन्होंने गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सर्जरी, सिविल इंजीनियरिंग, वास्तुकला जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व ज्ञान में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारतीय संस्कृति और दर्शन का विश्व पर गहरा प्रभाव पड़ा। विश्व विरासत की इन समृद्ध विरासत को न केवल हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से भावी पीढ़ी के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि शोध, सुधार और नए उपयोगों क लिए भी किया जाना चाहिए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारतीयों के लिए सबस प्रतीक्षित और रोमांचक नीति है क्योंकि यह शिक्षा के पुराने रटने के तरीकों को वास्तविक वैचारिक उपकरणों में बदल देती है। जून 2017 में, राष्ट्रीय शिक्षा नीति का मसौदा 2019 में पूर्व भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) के प्रमुख कृष्णस्वामी कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में एक पैनल द्वारा प्रस्तुत किया गया था और 29 जुलाई 2020 को भारत के केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित किया गया था। 21 वीं सदी के 20वें वर्ष में, भारत में नई शिक्षा नीति आई ह। भारत में पहली नई शिक्षा नीति 1968 में बनी, फिर 1986 में बनी, जिसके बाद 1992 में नई शिक्षा नीति में संशोधन किया गया। 34 साल बाद, नई शिक्षा नीति को लेकर 2021 में फिर से महत्वपूर्ण बदलाव किए गए हैं। जिसमें शिक्षा से जुड़े कई नियमों में बदलाव किया गया है। हाल ही में, मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय ने शिक्षा नीति में बदलाव के साथ–साथ अपने मंत्रालय का नाम बदल दिया है, मानव संसाधन प्रबंधन मंत्रालय अब शिक्षा मंत्रालय के रूप में जाना जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तहत, शिक्षकों के लिए व्यावसायिक विकास को आवश्यक बनाया गया है और शिक्षकों के लिए सेवा प्रशिक्षण भी आयोजित किया जाएगा, जिसमें शिक्षकों को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

नई शिक्षा नीति 2021 के तहत, 2030 तक शिक्षा व्यवस्था तय की गई है और मौजूदा 10़2 मॉडल के स्थान पर, 5़3़3़4 शिक्षा व्यवस्था के आधार पर पाठ्यक्रम का बंटवारा किया जाएगा। नई शिक्षा नीति 2021 के लिए भी केंद्र और राज्य सरकार के निवेश का लक्ष्य रखा गया है, जिसमें केंद्र और राज्य सरकार शिक्षा के क्षेत्र में देश के सकल घरेलू उत्पाद के 6: के बराबर शिक्षा क्षेत्र में सहयोग के लिए निवेश करेगी। शिक्षा नीति प्रत्यक व्यक्ति की रचनात्मक क्षमता के विकास पर विशेष बल देती है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा को न केवल संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास करना चाहिए बल्कि साक्षरता और संख्यात्मकता की 'आधारभूत क्षमता' और 'उच्च–क्रम' संज्ञानात्मक क्षमताएं, जैसे कि महत्वपूर्ण सोच और समस्या समाधान, सामाजिक, नैतिक और भावनात्मक क्षमता और
मनोदशा का भी।

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य

इस शोधपत्र का मुख्य उद्देश्य गुणात्मक स्तरों के माध्यम से प्राथमिक और माध्यमिक डेटा का विश्लेषण नई शिक्षा नीति 2020 के विशेष संदर्भ में मातृभाषा का अध्ययन करना है। इस शोध के अन्य निम्नलिखित है, जो प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से इस अध्ययन के उद्देश्य को पूरा करने से संबंधित हैं:

- मातृभाषा की अवधारणा और इतिहास को पेश करना
- नई शिक्षा नीति 2020 के प्रासंगिकता अध्ययन की आलोचना करने के लिए
- दुनिया में विभिन्न मुद्राओं को उजागर करने के लिए
- भारत में नई शिक्षा नीति का ऐतिहासिक अध्ययन करना

मातृभाषाः नई शिक्षा नीति 2020

भारत विविध सांस्कृतिक विरासत वाला एक बहुभाषी देश है। भाषा, देश भर में और विदेशों में तत्काल आसपास के लोगों के साथ ज्ञान और संचार के साधनों को इकट्ठा करने का एक माध्यम है। 21वीं सदी में तकनीकी प्रगति और वैश्वीकरण के कारण समुद्री परिवर्तन देखा गया है। भारत का राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का उद्देश्य बदलती दुनिया के साथ सीखने के नए परिणामों को जोड़ना है। 2001 की जनगणना रिपोर्ट के अनुसार, भारत 122 भाषाओं का घर है, जिनमें से 22 भाषाएं दस लाख से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं, जबकि शेष 100 भाषाएं 10,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती हैं। एक अलग स्रोत ने भारत में उपयोग की जाने वाली 1,500 से अधिक भाषाओं को रिकॉर्ड किया। भारत ने पिछले 50 वर्षों में 220 भाषाओं या बोलियों को खो दिया है और यूनेस्को ने 197 भाषाओं को ''संकटग्रस्त'' घोषित किया है।

29 जुलाई, 2020 को केंद्रीय मंत्रिमंडल द्वारा अनुमोदित राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) में कहा गया है कि जहां भी संभव हो, ग्रेड V तक स्कूलों में शिक्षा का माध्यम – अधिमानतः ग्रेड VIII तक – मातृभाषा या स्थानीय या क्षेत्रीय भाषा होनी चाहिए। राष्ट्रीय शिक्षा नीति का कहना है, ''यह सुनिश्चित करने के लिए सभी प्रयास जल्द ही किए जाएंगे कि बच्चे द्वारा बोली जाने वाली भाषा और शिक्षण के माध्यम के बीच मौजूद किसी भी अंतर को पाट दिया जाए।''

एक बच्चे की मातृभाषा में प्रारंभिक स्कूली शिक्षा, जैसा कि नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में सिफारिश की गई है, सीखने में सुधार कर सकती है, छात्रों की भागीदारी बढ़ा सकती है आर ड्रॉपआउट की संख्या को कम कर सकती है, जैसा कि दुनिया भर से साक्ष्य के इंडिया स्पेंड विश्लेषण के अनुसार है। हालांकि, विशेषज्ञों ने कहा, इसके लिए नई पुस्तकों, नए शिक्षक प्रशिक्षण आर अधिक धन की आवश्यकता होगी, साथ ही, भारत में भाषाओं और बोलियों की बहुलता को देखते हुए, किसी एक क्षेत्र में शिक्षा के माध्यम के रूप में उपयोग किए जा सकने वाले किसी एक को घर में रखना मुश्किल है।

केंद्र सरकार में पूर्व स्कूलो शिक्षा सचिव अनिल स्वरूप ने कहा, ''यह एक जबरदस्त विचार है। ऐसा होना चाहिए।'' स्कूल के शुरुआती वर्षों में जिस भाषा के साथ बच्चा सबसे अधिक सहज होता ह, उसका उपयोग करने से उपस्थिति और सीखने के परिणामों में सुधार होता है, और नई भाषाएं सीखने की क्षमता में भी सुधार होता है। दुनिया भर के अध्ययनों से यह भी पता चलता है कि यह कक्षा की भागीदारो को बढ़ाता है, ड्रॉपआउट को कम करता है और ग्रेड पुनरावृत्ति को कम करता है।

शैक्षणिक संस्थानों के लिए पहला कदम, कई भाषाएं बोलने वाले शिक्षकों में निवेश करना होगा। वर्तमान में, ज्यादातर शिक्षक अंग्रेजी, क्षेत्रीय भाषा और हिंदी बोलते हैं। नई शिक्षा नीति 2020 के तहत, स्कूलों और कॉलेजों को या तो मौजूदा शिक्षकों को अलग–अलग भाषाओं में पढ़ाने के लिए प्रशिक्षित करना होगा या अतिरिक्त स्टाफ प्राप्त करना होगा।

कोलकाता के एम हाई स्कूल के प्राचार्य आरके गुप्ता ने कहा, "यह निश्चित रूप से एक अतिरिक्त खर्च होगा लेकिन हमें छात्रों की पसंद की भाषा में पढ़ने का विचार पसंद है। हालांकि, हमें इस बात पर गौर करना होगा कि कितने छात्र किस भाषा को चुनते हैं।"

नीति में परिकल्पित नया त्रि–भाषा सूत्र कोई नई अवधारणा नहीं है, यह लंबे समय से प्रचलन में है, लेकिन प्रावधान यहां बड़े लचीलेपन के साथ रखे गए हैं, कि किसी भी राज्य, क्षेत्र या छात्र पर कोई भाषा नहीं थोपी गई है। एक छात्र या राज्य किसी भी दो मूल भाषा आर एक तीसरी भाषा को चुनने के लिए स्वतंत्र है। इसने कहा, ''जहां तक संभव हो शिक्षा का माध्यम ग्रेड 5 पर होगा, लेकिन अधिमानतः कक्षा 8 और उसके बाद, मातृभाषा– स्थानीय भाषा या क्षेत्रीय भाषा''। चूंकि कोई भी भाषा अनिवार्य नहीं है, छात्र अंग्रेजी सीखना छोड़ सकते हैं, जो भारतीय छात्रों को चीन के सामने विश्व बाजारों में एक नुकसानदेह स्थिति में डाल सकता है। साथ ही, अंग्रेजी को छोड़ा नहीं जा सकता। शोधकर्ताओं ने पाया है कि 2 से 8

वर्ष की आयु के बच्चे तेज गति से भाषा सीखते हैं और इसलिए बहुभाषावाद के छात्रों के एक छोटे समूह के लिए महान संज्ञानात्मक लाभ हैं। 18 साल की उम्र के बाद भाषा सीखना मुश्किल हो जाता है। नई प्रणाली में, छात्र 3 साल की उम्र में स्कूलों में शामिल होंगे और तीनों भाषाएं सीखेंगे। यह पता चला है कि एक बच्चे के संचयी मस्तिष्क का 85: 6 साल की उम्र से पहले विकसित हो जाता है, जो मस्तिष्क को अनुकरण करने के लिए महत्वपूर्ण देखभाल को आकर्षित करता है। तुकबंदी, खेल मोड, सरल वाक्य निर्माण अभ्यास आदि के माध्यम से बहुत कम उम्र से प्रवेश स्तर पर अंग्रेजी का परिचय, अंग्रेजी सीखने को और अधिक राचक बना देगा। साथ ही संचार की मूल बातें, घरेलू भाषा में संख्यात्मक कौशल हासिल करने से छात्र के लिए बाद में जीवन में अंग्रेजी सीखना आसान हो जाएगा। के कस्तूरीरंगन के अनुसार, उच्च ग्रेड के छात्र अंग्रेजी और मातृभाषा में द्विभाषी तरीके से विज्ञान और गणित सीखेंगे। हिंदी पट्टी की तीन भाषाएं शिक्षा के माध्यम के रूप में हिंदी, आठवीं अनुसूची से अंग्रेजी और एक भारतीय भाषा, और गैर–शिक्षा के माध्यम के रूप में घरेलू भाषा या स्थानीय भाषा, अंग्रेजी और एक आधुनिक भारतीय भाषा होगी। हिंदी भाषी राज्य नीति घरेलू भाषा में पढ़ाने के लिए यूनेस्को के दिशानिर्देश के अनुरूप है, ''जातीय रूप से विविध समुदायों में कम से कम छह साल की मातृभाषा शिक्षा प्रदान की जानी चाहिए ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि शिक्षा के माध्यम से एक अलग भाषा के बोलने वाले पीछे न रहें।''

कंद्रीय शिक्षा मंत्री रमेश पोखरियाल 'निशंक' ने मध्य प्रदेश वेबिनार में दोहराया कि सरकार अंग्रेजी के खिलाफ नहीं है, लेकिन भारतीय भाषाओं को मजबूत करना चाहती है, यह सवाल करते हुए कि क्या प्राथमिक स्कूली बच्चों को पढ़ाने के लिए मातृभाषा शिक्षा का सबसे अच्छा माध्यम होगा, नियमित रूप से चक्कर लगा रहे हैं। "जो लोग शिक्षा के माध्यम के रूप में मातृभाषा का उपयोग करने के लाभ पर संदेह करते हैं उन्हें मैं कहूंगा कि कुछ शीर्ष विकसित देशों ने इसके साथ बड़ी उपलब्धियां हासिल की हैं। हम अंग्रेजी भाषा के खिलाफ नहीं हैं, लेकिन हम भारतीय भाषाओं को मजबूत करने की कोशिश कर रहे हैं।'' मंत्री का स्पष्टीकरण राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के जारी होने के बाद आया है, जहां केंद्र ने प्रस्तावित किया है कि कक्षा V तक, और अधिमानतः आठवीं कक्षा तक, मातृभाषा में शिक्षा या छात्रों की स्थानीय या क्षत्रीय भाषा जहां भी संभव हो प्रदान किया। संस्कृत जैसी शास्त्रीय भाषाएं भी सभी स्तरों पर पेश की गई हैं, जबकि माध्यमिक स्तर पर विदेशी भाषाओं की पेशकश की जाएगी।

उपसंहार

विकासशील दुनिया के कोने–कोने में बहुत से बच्चे स्कूल में बहुत कम सीख रहे हैं, एक सच्चाई जिसे शिक्षण से जोड़ा जा सकता हैं, जो कि एक भाषाई भाषा में ह, जिसे वे पूरी तरह से नहीं समझते हैं। यह एक ऐसी प्रथा है जो अपर्याप्त या गैर–मौजूद सीखने और ज्ञान और कौशल के अधिग्रहण, अलग–अलग अनुभवों और उच्च छोड़ने और पुनरावृत्ति दर की ओर ले जाती है। शिक्षा की गुणवत्ता विकसित करने के लिए भाषा नीतियों को मातृभाषा सीखने पर ध्यान देने की आवश्यकता है। प्रारंभिक वर्षों में, मातृभाषा की उपेक्षा करने वाले शिक्षा के मॉडल अनुत्पादक, अप्रभावी हो सकते हैं और बच्चों के सीखने पर नकारात्मक प्रभाव डाल सकते हैं। कम से कम प्रारंभिक वर्षों में मातृभाषा शिक्षण शिक्षकों को पढ़ाने और शिक्षार्थियों को और अधिक प्रभावी ढंग से सीखने में सक्षम बना सकता है। बहुत लंबे समय से, नीति निर्माताओं द्वारा मातृभाषा शिक्षा पर ज्यादातर ध्यान नहीं दिया गया है। हालांकि इस बात के उत्साहजनक संकेत हैं कि नीति पेंडुलम मातृभाषा सीखने के महत्व की अधिक समझ की ओर बढने लगा है, अभी भी एक लंबा रास्ता तय करना है। अधिक सरकारें ऐसी नीतियां और कार्यक्रम विकसित कर रही हैं, जो सीखने के शुरुआतो चरणों में मातृभाषा को ध्यान में रखते हैं, लेकिन अभी भी बेहतर नीतियों को व्यक्त करने, दूसरी भाषाओं की शुरूआत के लिए बेहतर तैयारो सुनिश्चित करने और पर्याप्त संसाधनों को अलग रखने की आवश्यकता है। शिक्षा के लिए वैश्विक अभियान का मानना है कि साक्ष्य का प्रस्ताव है, कि मातृभाषा सीखने के क्षेत्र में अधिक प्रतिक्रियाशील और अच्छी तरह से नीतिगत विकास की पुष्टि करने के लिए नीति विकास में प्राथमिकता वाले क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

संदर्भ

1. https://digitallearning.eletsonline.com/2021/09/b-s-abdur-rahman-crescent-institute-of-science-and-technology-is-a-leader-in-higher-education/
2. Aithal, P. S., & Aithal, Shubhrajyotsna (2020). Analysis of the Indian National Education Policy 2020 towards Achieving its Objectives. International Journal of Management, Technology, and Social Sciences (IJMTS), 5(2), 19-41. DOI: http://doi.org/10.5281/zenodo.3988767.
3. Ajay Kurien , Sudeep B. Chandramana (2020). Impact of New Education Policy 2020 on Higher Education. https://www.researchgate.net/publication/346654722_Impact_of_New_Education_Policy_2020_on_Higher_Education?enrichId=rgreq-42343730e39c5293b75c7c35c7ebc8c8-XXX&enrichSource=Y292ZXJQYWdlOzM0NjY1NDcyMjtBUzo5NjU1ODY5NjgzOTk4NzJAMTYwNzIyNTI4MTA3Nw%3D%3D&el=1_x_2&_esc=publicationCoverPdf
4. https://ruralindiaonline.org/en/library/resource/national-education-policy-2020/?gclid=CjwKCAiAwKyNBhBfEiwA_mrUMkO3BBOK77wd8a8yW9WGUwOj0moD8vsitue2uFE6yWeaDdIEQf5EdhoCs5cQAvD_BwE
5. Nandini, ed. (29 July 2020). "New Education Policy 2020 Highlights: School and higher education to see major changes". *Hindustan Times*. Retrieved 30 July 2020.
6. Gohain, Manash Pratim (31 July 2020). "NEP language policy broad guideline: Government". *The Times of India*. Retrieved 31 July 2020.
7. https://en.wikipedia.org/wiki/National_Education_Policy